दिनांक 27/4/2023 को आयोजित महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव विश्वविद्यालय के 5वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया जी अभिभाषण

मंच पर विराजमान भारत सरकार के आदरणीय शिक्षा राज्य मंत्री डॉ. राजकुमार रंजन सिंह जी,

महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति श्री भबेंद्र नाथ डेका जी,

कुलपति प्रोफेसर मृदुल हजारिका जी,

कुलसचिव प्रोफेसर मृणाल कुमार बोरा जी,

शासी निकाय, प्रबंधन मंडल और विद्या परिषद के सम्मानित सदस्य,

विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी गण, कर्मचारी गण, संकाय सदस्य, छात्र, शोधार्थी और श्रीमंत शंकरदेव संघ के सदस्य, विशिष्ट अतिथि गण, डिग्री प्राप्त करनेवाले स्नातक-स्नातिकाओं, मीडिया के बंधुओं, देवियों और सज्जनों,

मैं सबसे पहले, महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह के इस शुभ अवसर पर आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

आज विभिन्न डिग्रियां प्राप्त करने वाले मेरे प्यारे विद्यार्थियों को मैं हार्दिक बधाई देता हूं। साथ ही, मैं उन अभिभावकों और शिक्षकों को भी बधाई देता हूं कि जिन्होंने हमारी इस नई पीढ़ी को जीवन में सबसे अच्छी चीज यानी शिक्षा दी है।

मित्रों,
"सर्वगुणाकर"- महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव के नाम से स्थापित विश्वविद्यालय के 5वें दीक्षांत समारोह में शामिल होकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव (1449-1568 ई.) एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी और सर्वकालिक महान मानवतावादी थे। मुझे खुशी है कि यह विश्वविद्यालय उस महापुरुष के जीवन और दर्शन को व्यापक बनाने का प्रशंसनीय कार्य कर रहा है।

मेरे प्यारे विद्यार्थियों,

आज आप अपनी कड़ी मेहनत और समर्पण के माध्यम से जो डिग्री प्राप्त कर रहे हैं, वह आपको एक शिक्षित नागरिक के रूप में आपके समाज में विशिष्ट बनाती है। आप दूसरों के बीच विशेष स्थान रखते हैं क्योंकि आप श्रीमंत शंकरदेव के नाम से स्थापित एक उच्च शैक्षिक संस्थान से आते हैं और आपसे इस महान महापुरुष के दर्शन को अपने शब्दों, विचारों और कार्यों में प्रतिबिंबित करने की अपेक्षा की जाती है। मैं इस अवसर पर "श्रीमंत शंकरदेव संघ" के सम्मानित पदाधिकारियों को हृदय की गहराइयों से धन्यवाद देना चाहूँगा, क्योंकि उन्होंने इस विश्वविद्यालय को अस्तित्व में लाने के लिए बहुत मेहनत की थी। मुझे उम्मीद है कि यह विश्वविद्यालय महापुरुष शंकरदेव के दर्शन और शिक्षाओं को और अधिक ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए निरंतर प्रयास करेगा।

मित्रों,

असम प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर एक सुन्दर प्रदेश है। यह पवित्र भूमि ने हमें सदियों से शिक्षा के साथ-साथ पर्यावरण से जुड़े रहने की प्रेरणा दी है। आज हमें अपने संसाधनों का प्रबंधन, सावधानीपूर्वक और योजनाबद्ध तरीके से करने की जरूरत है। वर्तमान में सरकार ने, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई-टीआई), रोजगार वृद्धि प्रशिक्षण कार्यक्रम (ईईटीपी), राष्ट्रीय रोजगार संवर्धन मिशन (एनईईएम), एआईसीटीई- स्टार्टअप, कौशल मूल्यांकन मैट्रिक्स, वोकेशनल एडवांसमेंट ऑफ यूथ (SAMVAY), लीडरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम आदि जैसी योजनाओं को सफलतापूर्वक क्रियान्वित की है। शिक्षा प्रणाली में शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं, सरकारी एजेंसियों, नियोक्ताओं और भावी नियोक्ताओं, बुद्धिजीवियों और थिंक-टैंक को शामिल किया गया है। दूसरी ओर, शिखर सम्मेलनों और अन्य सम्मेलनों के रूप में महत्वपूर्ण आयोजनों के सकारात्मक परिणाम सामने आते हैं, लेकिन कई बार उन परिणामों के लाभ उठाने की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। इसलिए, योजनाकारों, शिक्षकों और संस्थानों के प्रमुखों के लिए यह आवश्यक है कि वे ऐसे आयोजनों के परिणामों और नीतियों पर ध्यान दें और सामूहिक रूप से समाज और राष्ट्र की बेहतरी के लिए काम करें।

मित्रों,

नृत्य, संगीत के साथ-साथ लोगों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना की अभिवृद्धि में श्रीमंत शंकरदेव का योगदान अतुलनीय रहा है। सामाजिक नवनिर्माण का, उनका मिशन ही उन्हें एक विशिष्ट स्थान दिलाता है। श्रीमंत शंकरदेव को एक समाजसुधारक के साथ ही एक सामाजिक अभियंता कह सकते हैं, क्योंकि उन्होंने एक बेहतर सामाजिक संरचना और संतुलित व्यवस्था दी है। उन्होंने एकेश्वरवाद पर आधारित "नववैष्णव धर्म" की स्थापना की और उसे बढ़ावा देने के साथ-साथ, उसका स्वयं प्रचार भी किया। मुझे खुशी है कि आज इस संस्थान के माध्यम से श्रीमंत शंकरदेव के शाश्वत संदेशों का और व्यापकता के साथ प्रचार हो रहा है, समाज का नवनिर्माण हो रहा है। मेरी दृष्टि में यह संस्थान वस्तुतः नए समाज सेवकों का निर्माण कर रही है।

मित्रों,

लोगों को साथ लेकर चलने और सामूहिक रूप से समाज में परिवर्तन लाने की कला, हमारे शंकरदेव के व्यक्तित्व में स्पष्ट रूप में देखी जा सकती है। संक्षेप में कहूं तो इस भूमि ने सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कौशल विकास (जैसे - बुनाई-कताई, मुखौटा बनाना, उपकरण बनाना, आदि) के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में समग्र विकास को व्यापक किया है। हम जानते हैं कि श्री मंत शंकरदेव द्वारा स्थापित "नामघर" इन सारी शिक्षाओं की प्रगति का केंद्र कैसे बना। वस्तुतः हम "नामघर" को केवल प्रार्थना गृह के रूप में नहीं मानते। नामघरों में सामूहिक रूप से नाम-कीर्तन करने के साथ-साथ समाज की विकासात्मक गतिविधियों सहित विभिन्न प्रकार के सामुदायिक विवादों का भी निबटारा होता है। वस्तुतः यह एक ऐसा केंद्र है, जहां समाज के सभी वर्गों के लोग इकट्ठा होते हैं और एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से अंतिम फैसले पर पहुंचते हैं। दरअसल, नामघर जमीनी लोकतंत्र के लिए एक मंच प्रदान करने वाली एक ग्राम संसद की भूमिका ग्रहण करता है और इसे पंचायती राज का पूर्वगामी या अग्रदूत कहा जा सकता है। नामघर वास्तव में, असम की धरोहर हैं।

आज मैं इस अवसर पर महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव की एक प्रसिद्ध उक्ति का उल्लेख करना चाहता हूँ -

"ब्राह्मणर चांडालर निविचारी कुल।
दातात चोरत जेन दृष्टि एक तुल।।
निचत साधुत जार भैल एक ज्ञान।
ताहा केसे पंडित बुलिया सर्वजान।।"

(अर्थात् जिसे ब्राह्मण और चांडाल (अछूत) का कोई जाति भेद नहीं है, जिसकी दानी और चोर के लिए समान दृष्टि है, और जो निम्न और उच्च वर्ग के लिए बराबर भाव रखता है, ऐसा व्यक्ति विद्वान के रूप में पहचाना जाता है।)

मित्रों,
भारतवासियों को "स्वतंत्रता" हमेशा प्यारी रही है। कुछ करने या कुछ कहने के लिए विशेष रूप से आज की पीढ़ी दूसरों पर निर्भर रहना ठीक नहीं समझती है, बल्कि अपना नवीन विचारों को, अनुभवों को स्वयं प्रदर्शित करने का अवसर तलाशती है। हम सब साक्षी हैं कि दो साल पहले लोगों ने COVID-19 का मुकाबला करते हुए डिजिटलीकरण के माध्यम से अपनी आपदा को अवसर में बदलने का काम किया।

मित्रों,
आज मैं एक ऐसी पीढ़ी से बात कर रहा हूं जिसके द्वारा सदी के सबसे बड़े मोड़ को देखने की संभावना है। एक बेहतर कल का तत्काल निर्माण समय की पुकार है। बुद्धिमत्ता और कड़े परिश्रम के बल पर ही रचनात्मकता और नवीनता लाई जा सकती है। नवीन चिंतन और जन भागीदारी से हर समस्या का निराकरण हो सकता है। समाज और देश के विकास का अर्थ केवल नागरिकों का सुसंस्कृत होना नहीं है, बल्कि नागरिकों में मानवीय, नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का होना भी उतना ही जरूरी है।

मित्रों,
आज की दुनिया बेहद चुनौतीपूर्ण है। हमें अपने व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में लगातार चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। मुझे उम्मीद है कि आज के दीक्षांत समारोह में डिग्रियाँ प्राप्त करने वाले मेरे प्यारे विद्यार्थी अपने ज्ञान, कौशल और अनुभवों का उपयोग कर इन चुनौतियों पर विजय हासिल कर सकेंगे।

संस्कृत में एक प्रसिद्ध कहावत है, जो सभी विद्यार्थी भलीभांति जानते हैं -

"उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै: ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा: ।।"

(अर्थात कोई भी काम कड़ी मेहनत से ही पूरा होता है केवल सोचने भर से नहीं, कभी भी सोते हुए शेर के मुंह में हिरण खुद नहीं आ जाता।
अतः हम सभी को आगे बढ़ने के लिए मेहनत करनी ही होगी।)

मित्रों,
वेदांत पर आधारित शंकरदेव की शिक्षाओं ने 'भक्ति' का उपदेश दिया, जो मानवीय मूल्यों पर आधारित है। श्रीमंत शंकरदेव ने सद्गुणों को इस ढंग से प्रस्तुत किया जिसने लोगों के हृदय को बरबस आकर्षित किया। 'ईश्वर' और 'जीव' की अपनी अवधारणा के साथ शंकरदेव ने सभी जाति, पंथ और धर्म के लोगों को बराबरी का दर्जा देते हुए सामाजिक परिवेश के हर पहलू में सामाजिक सुधार किए। सिद्धांत और व्यवहार दोनों में श्रीमंत शंकरदेव की बढ़ती प्रासंगिकता को इस प्रतिष्ठित संस्थान द्वारा और अधिक मूर्त रूप दिया गया है और श्रीमंत शंकरदेव संघ द्वारा उठाया गया कदम बेहद सराहनीय है।

अंत में, मैं विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल एवं स्वर्णिम भविष्य की कामना करते हुए अपना वक्तव्य यही समाप्त करता हूं।

जय हिन्द।